मुसीबत | **ताड़ीखेत के धुराफाट पट्टी की सब्जी उत्पादक बेल्ट में बूंद तक न गिरी**

कहीं सूखा, कहीं बरस रही आफत

संवाद सूत्र, ताड़ीखेत, रानीखेत (अल्मोड़ा) : अबकी मानसून कमजोर क्या पड़ा चुनौतियों से भरे पहाड़ में किसानों की मुश्किल और बढ़ गई है। सीमांत पिथौरागढ़ व गढ़वाल मंडल में तेज बारिश से जहां दुश्वारियां बढ़ गई हैं, वहीं जनपद के बड़े हिस्से अभी सूखे की चपेट में हैं। ज्यादा दूर न जाकर ताड़ीखेत व द्वाराहाट विकासखंड को ही लें, यहां सब्जी उत्पादक बेल्ट में सीजनल फसल चौपट होने के कगार पर पहुंच गई है। मेघों की बेरुखी से अबकी काश्तकारों के लिए लागत वसूलना ही दूभर हो गया है। मानसून सक्रिय होने के बावजूद खंडवृष्टि को शोध वैज्ञानिक जलवायु परिवर्तन का असर मान रहे।

पर्याप्त बारिश न होने से सैकड़ों हेक्टेयर खेतों के साथ ही एक लाख से अधिक की आबादी की प्यास बुझाने वाली गैरहिमानी गगास व जीवनदायिनी कोसी की सहायक नदी कुजगढ़ रोखड़ बन चुकी है। सिंचाई के संसाधन बेपानी होने के बाद अब मेघों के मुंह फेर लेने से सब्जी उत्पादक किसानों की कमर टूटने लगी है।

ये सीजनल सब्जियां सूखने लगी : ताड़ीखेत ब्लॉक के धुराफाट क्षेत्र में आसमान से बूंद तक न गिरने का ही नतीजा है कि ढाई सौ हेक्टेयर में तैयार सीजनल सब्जियों मसलन फूल गोभी, सामान्य व सिमला मिर्च, टमाटर, फ्रासबीन आदि की खेती चौपट होने के कगार पर जा पहुंची है।

बारिश न होने से धूराफाट पट्टी में सब्जियों की फसल चौपट होने के कगार पर

बीमा से वंचित खाएंगे घाटा

धुराफाट पट्टी में लगभग 430 किसान सब्जी उत्पादन से जुड़े हैं। इनमें से 123 ने फसल का बीमा कराया है। जिन्होंने बीमा कराया है, उन्हें विभाग से क्लेम की आस है। मगर जो वंचित रह गए हैं, उन्हें तगड़ा झटका लग सकता है। लछीना के काश्तकार मदन सिंह के अनुसार एक खेत के लिए 400 रुपये प्रति 10 ग्राम बीज बोया गया। बारिश न होने से सौ रुपये वसूलना भी दूभर हो गया है। वह कहते हैं कि यदि राजस्व विभाग क्षति का सर्वे करता भी है तो मैदान के हिसाब से बने मानक पहाड़ में छोटी जोत के किसान को राहत दे पाएंगे, कहना मुश्किल है।

इन गांवों में सूखे का संकट

स्यों, गुमटा, लछीना, मनारी, नावली, ऊणी, मंडलकोट, विशालकोट, गैरड़, गैरा, कोटाड़ आदि।

धुराफाट पट्टी में सूखे का संकट बढ़ गया है। हमने मौका मुआयना किया। बारिश न होने से फसल को क्षति हो रही है। जिन किसानों ने बीमा कराया है, उन्हें क्लेम दिया जाएगा। राजस्व विभाग की टीम सर्वे करेगी तो मुआवजा भी मलेगा। – **इंद्रलाल, उद्यान प्रभारी**

यह जलवायु परिवर्तन का ही असर है। तापमान के पैटर्न में बदलाव से मानसून को ताकत देने में अहम रोल निभाने वाली हवा का रूख भी बदला है। यही वजह है कि बारिश पॉकेट के रूप में हो रही। हालांकि अभी मानसून की शुरुआत है। अगस्त में हो सकता है और बेहतर बरसे। – **प्रो. किरीट कुमार, वरिष्ठ शोध वैज्ञानिक**